वर्ष: 31 :: अंक : 07
पृष्ठ : 08 :: मूल्य : 2 रुपए मात्र

प्रकाशन का 31 वां वर्ष

/mithilavarnan

मिथिला वर्णन

स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें
निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बोकारो :: 14-21 नवंबर, 2020 E-paper : www.varnanlive.com/e-paper E-mail : mithilavarnan@gmail.com

युवा झारखंड : हसीन सपने अब भी अधूरे

विजय कुमार झा

लम्बे संघर्ष के उपरांत 15 नवंबर 2000 को जन्मा झारखंड रूपी शिशु अब अपनी युवावस्था के मध्य में आ चुका है। जब यह प्रदेश अस्तित्व में आया, तो कई तरह के हसीन सपने संजोये गये, लेकिन इस युवा झारखंड के वे सपने आज भी अधूरे ही हैं। झारखंड ने अपनी स्थापना के 20 साल आज पूरे कर लिये और यह 21वें साल में प्रवेश कर चुका है। इस प्रदेश के विकास के लिए बातें तो बहुत हुईं, लेकिन यह राज्य विकास से कहीं ज्यादा राजनीतिक प्रयोगशाला और सियासत का मैदान बनकर रह गया। लिहाजा, आज भी हालात वैसे नहीं हो सके हैं, जिसकी अपेक्षा थी। झारखंड निर्माण के 20 वर्षों का सफर एक लंबा कालखंड होता है। इस दौरान किसी भी भौगोलिक क्षेत्र की जरूरत के अनुसार विकास की उम्मीद की जा सकती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, पानी जैसी आधारभूत संरचनाओं की व्यवस्था आराम से की जा सकती है। 20 वर्षों के इस पड़ाव पर आज बड़ी समीक्षा की जरूरत है। नये राज्यों के पुनर्गठन के क्रम में झारखंड ही एकमात्र ऐसा राज्य है, जिसकी स्थापना को स्वाधीनता संग्राम के महान योद्धा बिरसा मुंडा के जन्म दिवस के साथ जोड़ा गया है। 20 वर्ष पूर्व आज का दिन झारखंड के लोगों को एक नया सवेरा की तरह लग रहा था। हालांकि, बीस वर्षों की अवधि कोई बहुत बड़ा कालखंड नहीं होता। पर इस अवधि में एक नयी पीढ़ी आ जाती है। फिर आज तेजी से बढ़ते इस युग में इसे छोटी अवधि भी नहीं कहा जा सकता। हालांकि, यह कहना भी उचित नहीं होगा कि 20 वर्षों की इस अवधि के दौरान झारखंड की कोई उपलब्धियां नहीं हैं। राज्य में विकास के बहुत सारे कार्य हुए हैं, राज्य की सूरत भी बदली है, लेकिन यह भी सत्य है कि देश के इतिहास में सबसे लम्बे समय तक चलने वाले आंदोलनों के बाद मूर्त रूप में साकार होने वाले इस नये प्रदेश की जनता ने जो सुनहरे सपने देखे थे, वे आज भी अधूरे हैं। झारखंड के साथ ही छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड राज्यों की भी स्थापना हुई, **(शेष पेज-7 पर)**

सूचना : दीपावली के अवकाश के कारण 'मिथिला वर्णन' का यह अंक शनिवार को ही प्रकाशित किया जा रहा है। इसका अगला अंक 22 नवंबर को प्रकाशित होगा।

सियासी मौसम 'हेमंत ऋतु' में झारखंड की राजनीति ने ली नई करवट

बेरमो में जयमंगल, तो दुमका में छाया बसंत

संवाददाता

बोकारो/दुमका : हेमंत सोरेन के मुख्यमंत्रित्व वाले नेतृत्व में झारखंड की सियासत नई राह की ओर बढ़ती दिख रही है। बेरमो और दुमका विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों में यूपीए ने शानदार जीत हासिल की। बेरमो से कांग्रेस प्रत्याशी कुमार जयमंगल सिंह उर्फ अनुप सिंह ने बीजेपी के योगेश्वर महतो बाटुल को 14,225 से अधिक वोट से पराजित किया। जबकि दुमका सीट पर सीएम हेमंत सोरेन के भाई व झामुमो प्रत्याशी बसंत सोरेन ने भाजपा की लुईस मरांडी को 6,842 वोट से हराया। कुमार जयमंगल को 94,022 वोट मिले। जबकि, उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी योगेश्वर महतो बाटुल ने 79,797 वोट हासिल किया। वहीं, झामुमो प्रत्याशी बसंत सोरेन को 80,559 मत मिले। जबकि भाजपा की डॉ. लुईस मरांडी को 73,717 वोट मिले हैं। बेरमो सीट के लिए चास के कृषि उत्पादन बाजार समिति प्रांगण में कुल 19 राउंड चली काउंटिंग में जयमंगल को 94,022 वोट मिले। जबकि, उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा के योगेश्वर महतो बाटुल ने 79,797 वोट हासिल किये। जयमंगल ने क्षेत्र में हुए कुल 60.20 प्रतिशत मतदान में 49.36 प्रतिशत वोट पर कब्जा जमाया, तो बाटुल ने 41.89 प्रतिशत वोट प्राप्त किये। तीसरे स्थान पर रहे इस चुनाव में बसपा का दामन थामने वाले झारखंड के पूर्व ऊर्जा मंत्री लालचंद महतो। उन्हें महज 4,281 मत लाकर संतोष करना पड़ा। गौरतलब है कि कांग्रेस प्रत्याशी कुमार जयमंगल उर्फ अनुप सिंह को शिकस्त देने के लिए भाजपा व आजसू द्वारा किये गये सारे सम्मिलित प्रयास इस चुनाव में विफल साबित हुए। दरअसल, भाजपा प्रत्याशी योगेश्वर महतो बाटुल की जीत के लिए राज्य के तीन-तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों, क्रमशः बाबूलाल मरांडी, अर्जुन मुंडा और रघुवर दास ने भी जबर्दस्त मेहनत की थी। इनके अलावा गिरिडीह के आजसू सांसद चन्द्र प्रकाश चौधरी तथा बाघमारा के भाजपा विधायक ढुल्लू महतो बेरमो कोयलांचल में अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहते थे। सबने अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी, लेकिन सब धरा का धरा रह गया। वहीं, दूसरी तरफ इस जीत के साथ ही बेरमो विधानसभा उपचुनाव में दिवंगत राजेंद्र प्रसाद सिंह की विरासत बचाने में उनके पुत्र कुमार जयमंगल सिंह सफल रहे। जयमंगल ने तमाम सियासी सूरमाओं को मात देकर राजनीतिक दिग्गजों की धमक के बीच **(शेष पेज-7 पर)**

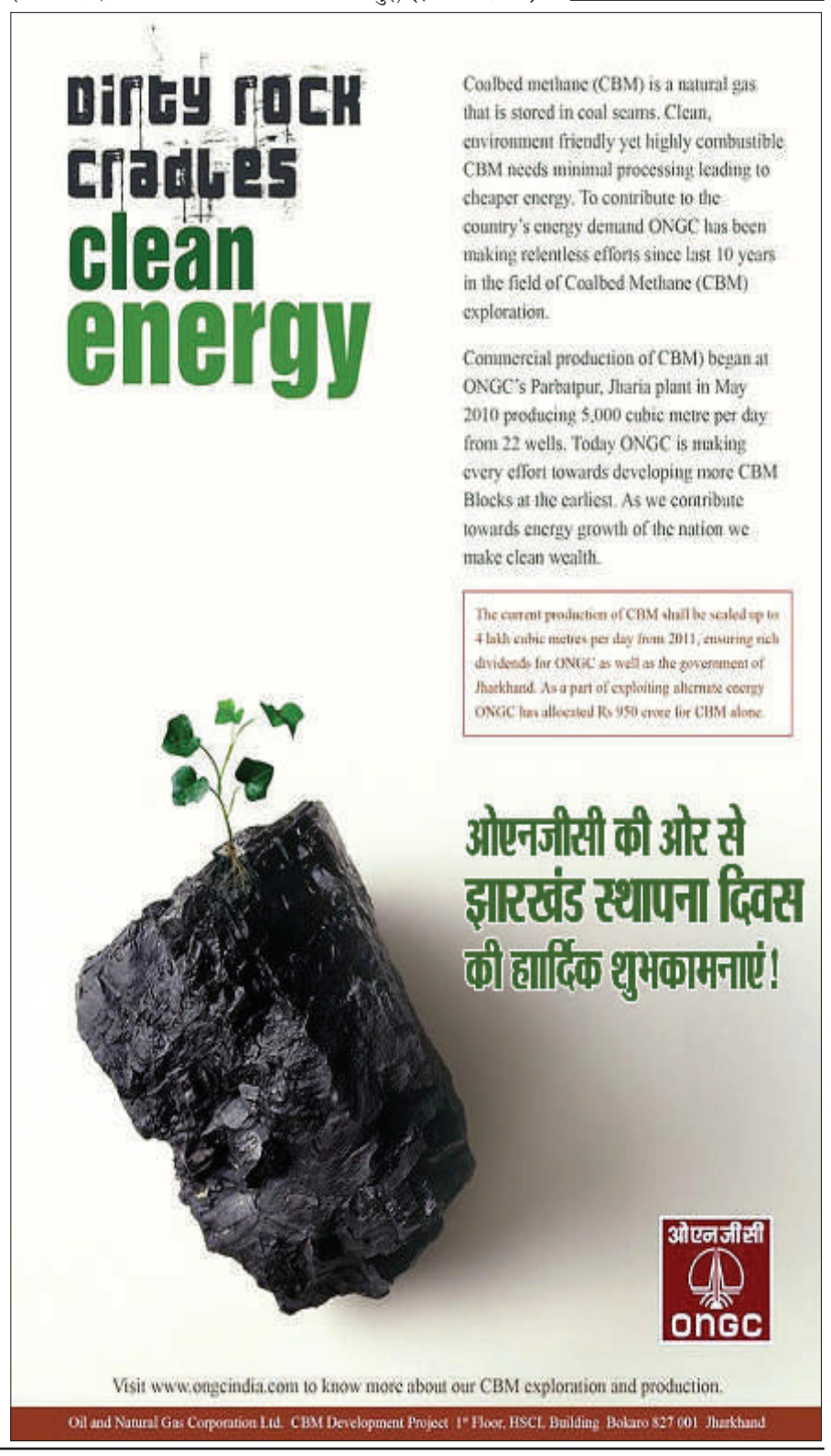

संपादकीय

अर्णब की रिहाई, सत्य की जीत!

देश की सर्वोच्च अदालत ने रिपब्लिक भारत टीवी के प्रधान संपादक और पत्रकार अर्णब गोस्वामी को अंतरिम जमानत दे दी। कोर्ट ने महाराष्ट्र के पुलिस आयुक्त को इस आदेश का पालन तुरंत सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही मुम्बई पुलिस द्वारा दो साल पूर्व बंद हो चुके मामले में गिरफ्तार किये गये पत्रकार अर्णब गोस्वामी आठ दिनों बाद जेल की सलाखों के बाहर आ गये। कड़ी सुरक्षा के बीच जेल से छूटकर घर लौटते समय अर्णब ने 'भारत माता की जय' और 'वन्दे मातरम' के नारे लगाये। साथ ही सुपीम कोर्ट का आभार जताया और कहा कि यह भारत के लोगों की जीत है। सुप्रीम कोर्ट ने पत्रकार अर्नब गोस्वामी के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने के 2018 के मामले में महाराष्ट्र सरकार पर सवाल उठाये और कहा कि इस तरह से किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत आजादी पर बंदिश लगाया जाना न्याय का मखौल होगा। इसके साथ ही सर्वोच्च अदालत ने महाराष्ट्र सरकार को इस तरह की कार्रवाई के लिए कड़ी फटकार भी लगायी। सुप्रीम कोर्ट ने अर्नब गोस्वामी की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए उनके साथ दो अन्य आरोपियों को 50 हजार के बांड पर अंतरिम जमानत दी। न्यायमूर्ति धनन्जय वाई चंद्रचूड और न्यायमूर्ति इन्दिरा बनर्जी की पीठ ने कहा कि अगर राज्य सरकारें लोगों को निशाना बनाती हैं तो उन्हें इस बात का अहसास होना चाहिए कि नागरिकों की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सुप्रीम कोर्ट है। शीर्ष अदालत ने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि राज्य सरकारें कुछ लोगों को विचारधारा और मतभिन्नता के आधार पर निशाना बना रही हैं। अर्नब गोस्वामी की अंतरिम जमानत की याचिका पर सुनवाई करते हुए पीठ ने यह भी कहा कि 'हम देख रहे हैं कि एक के बाद एक ऐसा मामला है, जिसमें उच्च न्यायालय जमानत नहीं दे रहे हैं और वे लोगों की स्वतंत्रता, निजी स्वतंत्रता की रक्षा करने में विफल हो रहे हैं।' पीठ ने टिप्पणी की कि भारतीय लोकतंत्र असाधारण तरीके से लचीला है और महाराष्ट्र सरकार को इन सबको (टीवी पर अर्नब के ताने) नजरअंदाज करना चाहिए और न्यायालय ने महाराष्ट्र सरकार के मंसूबे पर चिन्ता जतायी। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी टिप्पणी की कि 'अगर उच्च न्यायालय इस तरह के मामलों में कार्यवाही नहीं करेंगे तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता पूरी तरह नष्ट हो जायेगी। हम इसे लेकर बहुत ज्यादा चिंतित हैं। अगर हम इस तरह के मामलों में कार्रवाई नहीं करेंगे तो यह बहुत ही परेशानी वाली बात होगी।' गोस्वामी की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे ने उनके और चैनल के खिलाफ दर्ज तमाम मामलों का जिक्र किया और आरोप लगाया कि महाराष्ट्र सरकार उन्हें निशाना बना रही है। साल्वे ने कहा, 'यह सामान्य मामला नहीं था और सांविधानिक न्यायालय होने के नाते बंबई उच्च न्यायालय को इन घटनाओं का संज्ञान लेना चाहिए था। क्या यह ऐसा मामला है, जिसमें अर्णब गोस्वामी को खतरनाक अपराधियों के साथ तलोजा जेल में रखा जाये।' उन्होंने अदालत से अनुरोध किया कि यह मामला सीबीआई को सौंप दिया जाये और अगर वह दोषी हैं तो उन्हें सजा दी जाय। दरअसल, पत्रकार अर्णब गोस्वामी को महाराष्ट्र पुलिस ने अपमानित और प्रताड़ित करते हुए किसी कुख्यात आतंकवादी की तरह इसलिए गिरफ्तार किया था, क्योंकि वे तीखे सवाल पूछते हैं। राष्ट्रवादी पत्रकारिता को अपना आदर्श मानने वाले अर्णब गोस्वामी ने कई मामलों में महाराष्ट्र सरकार को सवालों के घेरे में खड़ा किया। लेकिन, सबसे दुखदायी यह रहा कि अर्णब की गिरफ्तारी के तरीकों पर देश के कई मीडिया घरानों और पत्रकारों को जिस तरह मुखर होकर सामने आना चाहिए था, वे नहीं आये। उन्होंने चुप्पी साध ली। कई विदेशी मीडिया तो पत्रकार अर्णब को ही अपराधी मानकर चल रहे थे। लेकिन, देश के पत्रकारों को यह समझना चाहिए कि महाराष्ट्र सरकार की यह कार्रवाई भारतीय लोकतंत्र पर हमले की कार्रवाई थी। अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला था। अर्णब के सवाल पूछने के तरीकों से हमारी असहमति हो सकती है, पर सरकार के तानाशाही रवैये का हम समर्थन नहीं कर सकते। सर्वोच्च अदालत का यह फैसला सत्य की जीत है!

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
JOIN US ON facebook.com/mithilava
mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

उलगुलान के प्रणेता भगवान बिरसा मुंडा

झारखंड अपनी 20वीं वर्षगांठ मना रहा है। इसके साथ ही इस वीरभूमि के स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा का भी 15 नवंबर को जन्मदिन है। इस तथ्य कोई इंकार नहीं कर सकता है कि भारतीय भूमि में किसी ने पहली बार ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आवाज उठाई थी, तो वे थे आदिवासी। ऐसे ही एक वीर सपूत बिरसा मुंडा का जन्म आज के ही दिन 15 नवम्बर 1872 को हुआ था, जिन्होंने ने बेहद कम आयु में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक आंदोलन खड़ा कर दिया, जिसे उलगुलान के नाम से जाना जाता है। इस आन्दोलन के वीरों ने अपने तीरों का स्वाद ब्रिटिश राइफल को चखा दिया था, यद्यपि बिरसा अपने इस कार्य को पूर्ण नहीं कर सके, परन्तु यह आन्दोलन आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा बन गया और आगे चल कर भारत स्वतंत्र हुआ। नौ जून,1900 को रांची के जेल मोड़ स्थित कारागार में बिरसा मुंडा की मृत्यु हुई थी।

झारखंड में बिरसा मुंडा को भगवान की तरह पूजा जाता है। अपनी अमर शहादत से भगवान की तरह पूजे जाने वाले बिरसा मुंडा के नेतृत्व में 1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे। बिरसा और उसके चाहनेवाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया था। अगस्त, 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमान से लैस होकर खूंटी थाने पर धावा बोला। 1898 में मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई, जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी, लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियां हुईं। जनवरी 1900 में डोमबारी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था, जिसमें बहुत सी औरतें और बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियां भी हुईं। अंत में स्वयं बिरसा भी तीन फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार कर लिये गये। बिरसा मुंडा ने अपनी अंतिम सांसें नौ जून 1900 को रांची कारागार में ली। आज भी झारखंड, ओड़िशा, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुंडा को भगवान की तरह पूजा जाता है। उनकी जयंती पर उन्हें शत-शत नमन्।

सपना आज भी अधूरा

झारखंड अलग राज्य स्थापना के बाद अब 21वें साल में प्रवेश करने जा रहा है। लेकिन, इतने वर्षों के बाद भी बिरसा के उलगुलान के सपनों का झारखंड आज तक नहीं बन पाया है। बिरसा मुंडा ने आदिवासियों और मूलवासियों के अधिकार के लिए उलगुलान किया था। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन करते हुए झारखंड के साथ-साथ देश को शोषण-विहीन बनाने का सपना देखा था, लेकिन आज तक यह सपना अधूरा है। जिस समाज के लिए बिरसा ने कुर्बानियां दीं, उस समाज के हालात ठीक नहीं है। जिस सभ्यता और संस्कृति के अस्तित्व के लिए कुर्बानियां, हुईं उनका पालन नहीं हो रहा है। झारखंड में आदिवासियों की जनसंख्या लगातार कम हो रही है। उनकी जमीन उनके पास से छीनी जा रही है। झारखंड की बेटिया बड़े-बड़े शहरों में मानसिक, आर्थिक और शारीरिक शोषण का शिकार हो रही हैं। बच्चे कुपोषण के शिकार हो रहे हैं। ये तमाम हालात हैं। भगवान बिरसा ने तीन लक्ष्यों को प्राप्त करने लिए उलगुलान किया था। पहला- जल, जंगल और जमीन जैसे प्रकृतिक संसांधनों की रक्षा करना, दूसरा- अपने समाज की संस्कृति, भाषा और अस्मिता को बनाए रखना और तीसरा महिलाओं की रक्षा और सुरक्षा। लेकिन, दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज बिरसा के तीनों लक्ष्य तार-तार होते नजर आ रहे है।

देखा जाए तो झारखंड में जिनकी भी सरकारें बनीं, वे सिर्फ बिरसा मुंडा के नाम पर राजनीति करती रहीं। बिरसा के जन्मदिन पर झारखंड अलग राज्य तो बना, लेकिन उनके सपनों को हकीकत बनाने की दिशा में किसी ने कोई ठोस पहल नहीं की। इसलिए 20 वर्षों के बाद भी उनके सपने अधूरे हैं। बिरसा मुंडा ने कहा था कि उलगुलान का अंत नहीं होगा। वह उलगुलान आज भी झारखंड के गांवों में है। बिरसा मुंडा के नेतृत्व में झारखंड के आदिवासियों ने ऐतिहासिक लड़ाइयां लड़कर अंग्रेजों को आदिवासियों के लिये अलग कानून बनाने के लिये मजबूर कर दिया था। आज उसी कानून को बदलने की बात की जा रही है। बिरसा के आंदोलन से संबधित रिकार्ड छोटानागपुर के कमिश्नर के रिकार्ड रूम में होना चाहिए, जो नहीं है। इन ऐतिहासिक दस्तावेजों को खोजकर सुरक्षित रखने की जरूरत है। दुनिया में कई जगहों पर बिरसा से संबंधित दस्तावेज हैं। इसकी प्रति को झारखंड में लाया जाये। बिरसा पर शोध संस्थान बने। यह ऐतिहासिक धरोहर है। दूसरी बात, भारत सरकार के आधिकारिक रिकॉर्ड में बिरसा आज भी देशद्रोहियों की लिस्ट में है। शहीद का आधिकारिक प्रमाणीकरण लिखित दर्जा नहीं है। बिरसा झारखंड के आईकॉन हैं। उन्हें लोग भगवान की तरह पूजते हैं। न केवल राज्य के विकास, बल्कि अपने धर्म, देश सभी की रक्षा के लिये भगवान बिरसा के विचारों को आत्मसात कर उनके सपनों को साकार करने की जरूरत है। यही भगवान बिरसा मुंडा को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

– प्रस्तुति : योगो पूर्ति

प्रसंगवश : गुरु का धमाकेदार संदेश

बी. कृष्णा नारायण

अरे ओ बचवा .. कहां जा रहे हो। तनी इधर आओ, बैठो। भौजी चाय बना रही है, आओ पीकर जाना.. शक्ति सिंह ने बच्चा सिंह को हांक देते हुए कहा।

का बात है भैया, भोरे भोरे बड़ा खुश नजर आ रहे हैं। कोनो गुड न्यूज है का..., बच्चा सिंह ने बैठते हुए पूछा।

हां रे बच्चा गुड न्यूज त है। अपना मंगल है न, अरे उहे मंगल ग्रह, कुछे दिन पहले गया था अपने दोस्त के घर में, लेकिन उसका चाल सही नहीं होने के कारण वह दोस्त के घर में होते हुए भी अनमना सा था। अब उसका वक्रत्व समाप्त हो गया है। अब वह खुलकर अपनी बात रख सकेगा।

तो ये तो हुआ पहला गुड न्यूज।

दूसरा गुड न्यूज यह है कि जल्द ही गुरु, मकर राशि में प्रवेश करेंगे। वहां से वे अपने दोस्त मंगल के साथ गुप्त सम्बन्ध, लेकिन घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर लेंगे। हालांकि वे अपने दुश्मन के साथ दुश्मन के घर में जाकर, दुश्मन शनि के साथ बैठकर, अपने दोस्त मंगल से सम्बन्ध बनाएंगे...

लेकिन भैय्या ये तो डेंजर वाली बात हो गयी और आप इसे गुड न्यूज कह रहे हैं.. बच्चा सिंह ने बीच में ही शक्ति सिंह को रोकते हुए कहा।

अरे नहीं रे बचवा ये डेंजर वाली बात नहीं है। डेंजर वाली जो बात है उ हम आगे बताएंगे। यह तो गुड न्यूज ही है। यह तो एक ऐसी सोची समझी रणनीति का हिस्सा है और वह यह है कि तुम अगर हमारे लक्ष्य में बाधक हो तो हम तुम्हारा वध तुम्हारे घर में घुस कर ही करेंगे।

तो अब बताओ बच्चा, है न यह गुरु का धमाकेदार सन्देश।

और सुनो, इस खेल का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, केतु का इनको गुप्त समर्थन देना।

मतलब? बच्चा सिंह ने पूछा।

मतलब इ कि गरइ मछली देखे हो न?

हां भइया, माटी के भीतर रहती है।

हां, त बस समझ लो उसी के जैसा। दुश्मन के एक-एक छुपा ठिकाना इ निकाल कर गुरु और मंगल के सामने धर देगा।

चीन आ पाकिस्तान त गया काम से ..बच्चा सिंह ने खुश होते हुए कहा।

हां बच्चा, उनको त देर-सवेर जाना ही है।

अब ऐसे काहे बोल रहे हैं भैय्या। जब मामला एकदम फिट है त का दिक्कत है?

दिक्कत है बच्चा। हम कहे थे न कि एगो डेंजर वाली बात है। और उ इ है कि शुक्र का शनि को समर्थन मिलना। मंगल और गुरु मिलकर जिस योजना को केतु के सहयोग से अंजाम तक पहुंचाने की सोच रहे हैं न, उसमें बाधा पहुंचाने के लिए शनि ने अंतःपुर के सिपाही को जो रूप बदलने में माहिर है, उसे अपने साथ मिला लिया है।

अब इसका का मतलब हुआ भैय्या?

मतलब इ हुआ बच्चा कि विषकन्याओं का इस्तेमाल होगा। हनी ट्रैप पर नजर रखना होगा। अपने निकटतम सहयोगियों पर भी गिद्ध दृष्टि रखनी होगी।

ऐसा कब तक भैय्या?

मार्च 2021 तक।

इसके बाद क्या होगा..., ऐसा कहते हुए शक्ति सिंह की पत्नी चाय लेकर आ गईं।

इसके बाद शुक्र, मंगल के समर्थन में आ जायेगा। और तब होगा इस समय रची जाने वाली व्यूह रचना का क्रियान्वयन.., हो सके तो बचना। चीन और पाकिस्तान..पश्चिम बंगाल बच्चा.. शक्ति सिंह ने रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा।

चलो अब भौजी के हाथ का बना चाय पियो और दीप जलाने की तैयारी करो।

बोकारो में मौत का अर्द्धशतक

कोरोनाकाल... 50 लोगों ने अब तक गंवाई महामारी जान, लेकिन ज्यादातर गंभीर बीमारियों से थे ग्रसित

संवाददाता

बोकारो : बोकारो में कोरोना से मौत का अर्द्धशतक का आंकड़ा पहुंच चुका है। बीते हफ्ते शुक्रवार को बोकारो जनरल अस्पताल में कोरोना से मौत का एक और मामला सामने आया। चास के रहने वाले 65 वर्षीय एक बुजुर्ग की मौत हो गई। वह 7 नवंबर को दिल्ली से बोकारो लौटे थे। सांस में तकलीफ होने पर उनकी जब कोविड-19 जांच कराई गई तो वह कोरोना संक्रमित पाए गए। इसके बाद उन्हें इलाज के लिए बीजीएच में भर्ती कराया गया था। वहीं उनकी मौत हो गई। सिविल सर्जन डा. अशोक कुमार पाठक ने कहा कि वह कोरोना से संक्रमित तो थे ही, इसके साथ ही उन्हें हार्ट अटैक भी हो गया। इससे उनकी मौत हो गई। बता दें कि उक्त बुजुर्ग की मृत्यु के साथ ही जिले में कोरोना से मरने वाले लोगों की संख्या अब 50 हो चुकी है।

8 अप्रैल को हुई थी पहली मौत

सबसे पहली मौत 8 अप्रैल की देर रात बीजीएच में ही सामने आई थी। जिले के गोमिया प्रखंड अंतर्गत साड़म निवासी 75 वर्षीय बुजुर्ग की मौत झारखंड में कोरोना से सबसे पहली मृत्यु थी। इसके दो दिन पहले तक कोरोना से लगातार तीसरी मौत का मामला सामने आया। बोकारो जेनरल अस्पताल (बीजीएच) में कोरोना से चास के 70 वर्षीय एक बुजुर्ग व्यक्ति की मौत हो गई। सिविल सर्जन डॉ. अशोक कुमार पाठक के अनुसार कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद उन्हें चार दिन पहले बीजीएच में भर्ती कराया गया था। उन्हें ब्लडप्रेशर और शुगर की बीमारी पहले से थी। सांस में तकलीफ होने पर कोविड-19 टेस्ट में कोरोना, न्यूमोनिया की बीमारी भी निकल गई। इसके पहले मंगलवार को बीजीएच से ही 60 वर्षीय एक महिला की मौत कोविड-19 से हो गई। वह भी बीपी, शुगर और सांस में परेशानी से ग्रसित थीं। जबकि, सोमवार को बेरमो के रहने वाले लगभग 72 वर्षीय एक बुजुर्ग की रांची स्थित मेडिका में इलाज के दौरान मौत का मामला सामने आया था। सिविल सर्जन डा. अशोक कुमार पाठक के अनुसार अधिकतर मृतकों में वैसे मरीज हैं, जो पहले से गंभीर बीमारियों से ग्रसित थे। बता दें कि जिले के सबसे पहले मृतक साड़म निवासी बुजुर्ग भी दिल की बीमारी से पीड़ित थे।

मौत के मामलों ने फिर पकड़ी रफ्तार

नवंबर की 9 तारीख से कोरोना से मौत के मामले फिर बढ़ चले हैं। 27 अक्टूबर को सेक्टर-2 की रहने वाली 64 वर्षीय कोरोना संक्रमित एक महिला की मौत बीजीएच में इलाज के दौरान हो गई थी। जिले में अबतक कोरोना से 49 लोगों की मौत हो चुकी है। बीते अक्टूबर और सितंबर महीने में मौत के 16-16 केस आए थे। जुलाई के अंत तक जिले में कुल 2 मौतें हीं थीं। अगस्त बीतते-बीतते 2 से 14, सितंबर के अंत में 30 तथा 31 अक्टूबर तक 16 और बढ़कर कुल 46 मौत के मामले सामने आ चुके थे।

पहल 'पैडमैन' मूवी से प्रेरित हो बीएसएल ने स्वावलंबन केंद्र में लगवाई खास मशीन

ग्रामीण महिलाओं को कम खर्च में अब मिलेंगे हाई क्वालिटी नैपकिन

संवाददाता

बोकारो : महिला समिति बोकारो द्वारा बीएसएल के सीएसआर के सहयोग से संचालित स्वावलंबन केंद्र में सेमीऑटोमेटिक (अर्द्धस्वचालित) सेनेटरी नैपकिन मशीन लगाई गई है, ताकि कम लागत में उच्च गुणवत्ता वाली सेनेटरी नैपकिन महिलाओं तक पहुंचाई जा सके। वर्ष 2015 में बीएसएल ने सीएसआर कार्यों के तहत महिला समिति बोकारो के साथ मिलकर स्वावलंबन केंद्र, सेक्टर 4 में महिलाओं के लिए सेनेटरी नैपकिन उत्पादन प्रोजेक्ट शुरू किया था, जिसका उद्देश्य कम लागत के सेनेटरी नैपकिन बनाकर बोकारो के परिक्षेत्रीय इलाकों में ग्रामीण महिलाओं को वितरित करना था। आरम्भ में यह प्रोजेक्ट मैनुअल तरीके से कार्ययान्वित किया जा रहा था और महिला समिति के माध्यम से इसमें कुछ महिलाएं कार्यरत थी। मैनुअल मशीन द्वारा उत्पादन होने के कारण सेनेटरी नैपकिन का कुल उत्पादन कम था तथा गुणवत्ता भी बाजार में उपलब्ध अन्य सेनेटरी नैपकिन के मुकाबले कुछ कम थी। इस पृष्ठभूमि में बीएसएल के सीएसआर विभाग ने सेनेटरी नैपकिन के उत्पादन तथा गुणवता को बढ़ाने का निर्णय लिया तथा इस दिशा में नयी मशीन को खरीदने के निर्णय के दौरान यह भी ध्यान में रखा गया कि नयी मशीन को उत्पादन तथा गुणवत्ता में बेहतरी के साथ-साथ महिलाओं को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराए।

इस दौरान सेनेटरी नैपकिन के उत्पादन से सम्बंधित एक अन्वेषक श्री अरुणाचलम मरगनंथम की बनायी गयी मशीन पर ध्यान केंद्रित किया गया। इनके जीवन पर बनी फिल्म पैडमैन भी हमारे कार्यों के प्रेरणा का श्रोत थी। इसके बाद बीएसएल ने बीपीएससीएल के सहयोग से इस मशीन को मरगनंथम किकी कंपनी जया श्री इंडस्ट्रीज से खरीदा तथा महिला समिति के स्वावलंवन केंद्र में इसे स्थापित किया गया, जहां पहले से यह प्रोजेक्ट पुरानी मशीन से चलाया जा रहा था। नयी मशीन के आ जाने से पहले से कार्यरत महिलाओं के रोजगार में बिना कोई कमी हुए उत्पादन और गुणवता दोनों बेहतर हुई है और आसपास के परिक्षेत्रीय गावों में इसे वितरित करने की व्यवस्था की जा रही है।

बोकारो स्टील के संचार प्रमुख मणिकांत धान के अनुसार आने वाले समय में महिलाओं के स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके सशक्तीकरण में इस प्रोजेक्ट की अहम भूमिका रहेगी और बीएसएल का सीएसआर इसे कार्यान्वित कर अपने उदेश्यों की पूर्ति में सफल होगा।

हफ्ते की हलचल

कालीपूजा पर संगीत कार्यक्रम में कलाकारों ने बांधा समा

बोकारो : कालीपूजा के अवसर पर सेक्टर-2डी स्थित श्यामा माई मंदिर में गत वर्षों से भांति इस बार भी भव्य संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कोरोना के मद्देनजर सामाजिक दूरी के साथ कार्यक्रम में कई श्रद्धालु व संगीतप्रेमी शामिल हुए। उन्होंने पूजा के साथ भजनों का आनंद लिया। कलाकारों ने पूरी रात भजनों से समां बांधे रखा। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की शुरूआत आयुषी आनंद ने जय-जय भैरवि... गीत र भावनृत्य से की। इसके बाद कुमार मोहन ठाकुर ने अंबे आब उचित नहि देर..., कोन सुनबैं हमर बात मैया..., मैया अहीं कृपा सं सब काज मां चलैए..., शंभु शरण हम गहलहुं... आदि, उमेश झा ने जय जय भैरवि असुर भयाउनि..., जगदंब अहीं अबलंव हमर..., हे मां दर्शन द नैना जुड़ाउ ने..., हरब कहिया हे दुख मैया..., अरुण पाठक ने अंबे चरण कमल हैं तेरे..., धूप दीप माला लेने शरण मे एलहुं..., चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है..., संसार है इक नदिया..., तोरा मन दर्पण कहलाए...., पूजा के हेतु शंकर आयल छी हम पुजारी..., बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे... और मध्यरात्रि के बाद वरिष्ठ संगीतज्ञ पं. बच्चनजी महाराज ने राग भैरवि में झपताल निबद्ध भवानी दयानी... से सबको भावविभोर कर दिया। तबले पर पं. बच्चनजी महाराज के साथ-साथ रुपक झा और शुभम कुमार ने संगत की। मैथिली कला मंच कालीपूजा ट्रस्ट के महामंत्री सुनील मोहन ठाकुर और इस वर्ष के पूजा संयोजक अविनाश कुमार झा ने बताया कि यहा वर्ष 1984 से ही मां काली की विधिवत पूजा होती आ रही है।

दिवाली पर रहा श्रद्धा व उमंग का माहौल

बोकारो : धन की अधिष्ठात्री देवी मां महालक्ष्मी की पूजा-अर्चना तथा दीयों व रोशनी का त्यौहार दीपावली बोकारो, उपशहर चास सहित आसपास के पूरे इलाके में धूमधाम के साथ मनाया गया। हर बार की भांति इस बार भी दीपावली पर यहां भक्ति, श्रद्धा व आस्था के साथ-साथ उमंग, जोश व उल्लास का अनुपम संगम देखने को मिला। इस्पातनगरी में चारों तरफ का वातावरण आतिशबाजियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। बच्चों से लेकर बड़े बुजुर्गों ने भी दीपावली पर पटाखे फोड़ने के मजे लिये। वहीं, पूरा शहर दीयों तथा बिजली बल्बों की जगमगाहट से दमकती दुल्हन की तरह प्रतीत होता रहा। लगभग 15 दिन पहले से की गयी साफ-सफाई व रंग-रोगन के बाद लोगों ने पूरे उत्साह के साथ अपने आशियाने सजाये, रंगोलियां बनायीं और भक्तिभाव के साथ पूजन कर मां लक्ष्मी के अपने घर में स्थायी वास की कामना की। कोरोनाकाल के बावजूद लोगों के उत्साह में कोई कमी नहीं देखी गई। इसके पहले धनतेरस पर बोकारो में लगभग 74 करोड़ रुपए का कारोबार हुआ और बाजार गुलजार बने रहे।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को ईएसएल ने किया सम्मानित

बोकारो : वेदांता ग्रुप की मुख्य राष्ट्रीय स्टील कंपनी ईएसएल ने अपने ओ एंड एम पार्टनर (संचालन और रखरखाव) ह्यूमैन पीपल टू पीपल इंडिया (एचपीपीआई) के सहयोग से नन्द घर में आयोजित एक समारोह में अपने आंगनबाड़ी के उन कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया, जो इस मुश्किल समय में भी समुदाय के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहे हैं। इस अवसर पर पंकज मल्हान सीईओ ईएसएल स्टील लिमिटेड ने कहा फ्रंटलाइनर कार्यकर्ताओं को सम्मानित करने के लिए इस पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया है, ताकि वो इसी जोश के साथ काम करते रहने के लिए प्रेरित हों। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में भी हम इस तरह के समारोह आयोजित कर कर्मचारियों को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करते रहेंगे।

पत्रकारिता जगत को सूना छोड़ गये अभय मिश्र

बोकारो : दैनिक भास्कर के वरिष्ठ पत्रकार अभय मिश्र गौतम अब इस दुनिया में नहीं रहे। बीते हफ्ते सिटी पार्क में योगाभ्यास के दौरान उनका आकस्मिक हो गया। 49 वर्षीय अभय मिश्र सेक्टर-3ए स्थित अपने आवास से रोज की तरह घर से लगभग दो किलोमीटर की दूरी सिटी पार्क में मॉर्निंग वॉक और योगाभ्यास के लिए निकले थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार पार्क में टहलने के बाद योगाभ्यास के क्रम में ही उन्हें हार्ट अटैक आया और वहीं चंद मिनटों में वह बेसुध हो गए। आनन-फानन में तत्काल उन्हें बोकारो सदर अस्पताल लाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। इसके साथ ही वह बोकारो के पत्रकारिता जगत को हमेशा के लिए एक अपूरणीय क्षति देकर और सूना छोड़कर चल बसे। गौरतलब है कि स्व. मिश्र के घर में शादी की तैयारी चल रही थी। वह अपने भतीजे के विवाह की तैयारी में लगे थे। परिवार के सभी सदस्यों का धीरे-धीरे जुटान शुरू हो गया और घर में शुशियों का माहौल था, लेकिन अचानक किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। सबकुछ तहस-नहस हो गया। वह अपने पीछे इंजीनियरिंग कर रहे पुत्र अभिनव मिश्रा और बीएड कर रही पुत्री आशा मिश्रा, धर्मपत्नी रेखा मिश्रा और लगभग सालभर से बीमार चल रहीं लगभग 90 वर्षीय मां के अलावा अग्रज व उनके परिजनों को रोता-बिलखता छोड़ गए हैं। अत्यंत मृदुस्वभाव और हरदिल अजीज व्यक्तित्व के धनी स्व. मिश्र पिछले लगभग तीन दशक से पत्रकारिता से जुड़े थे।

द्रौपदी मुर्मू
राज्यपाल, झारखण्ड

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND
सत्यमेव जयते

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

नया विचार, नया संकल्प और नई सोच के साथ
झारखण्ड सरकार का हर कदम आपके लिए।

रोशनी के त्योहार दीपावली एवं झारखण्ड स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर समस्त झारखण्डवासियों को ढेर सारी शुभकामनायें

॥ अप्प दीपो भव ॥
अपने दीप स्वयं बनिए।
आपकी सेहत, आपकी सुरक्षा
कोरोना को हरायें, त्योहारों की खुशियाँ मनायें

मास्क पहनकर ही घर से बाहर निकलें।

बात करते वक्त कम से कम **दो गज की दूरी** अवश्य रखें और मास्क पहने रहें।

समय-समय पर **साबुन** से हाथ धोते रहें ।

सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

सूर्य ही जगत के ईश्वर हैं

गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली

ब्रहेश नाच्चुतेशाय सूर्याय
आदित्य वर्चसे
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे
नमः

हे सूर्यदेव! आप ब्रह्मा, विष्णु और महेश के ईश हैं। सौर मंडल में आपकी ही द्युति है, वह आपसे ही प्रकाशित है। सर्वभक्षी, रौद्र रूप धारण करने वाली अग्नि आपका ही रूप है और आपके उग्र रूप को नमन है।

इस श्लोक द्वारा सूर्य की स्तुति करते हुए श्रीराम उन्हें नमन कर रहे हैं। प्रसंग है कि रावण से युद्ध करते-करते श्रीराम थक गये और उस समय उस युद्ध को देखने आये महर्षि अगस्त्य ने श्रीराम में नव ऊर्जा का संचार करने के लिए उन्हें सूर्य की स्तुति, आदित्य हृदय स्तोत्र के माध्यम से करने की आज्ञा दी और उसे करने के उपरांत श्रीराम युद्ध में विजयी हुए।

जीवन में चुनौतियां आती हैं और उनसे संघर्ष करने की ऊर्जा सूर्य प्रदान करते हैं। इसीलिए आरंभ से सूर्य पूज्य हैं। ऋग्वेद में सूर्य के संदर्भ में कहा गया है- 'सूर्य आत्मा जगत्सतथुवश्च।'

इस जगत के कण-कण में ईश्वर का निवास है। इसका तो सीधा सा अर्थ यही निकलता है कि इस जगत के ईश्वर सूर्य हैं। सूर्य ही जगत की आत्मा है। ईशावास्य उपनिषद में सूर्यदेव की स्तुति पुरुष रूप में की गई है-

'पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापात्य व्यूह रश्मीन्समूह
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि
योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि'

हे पुष्टि देने वाले, ऋषियों में अनोखे नियम वाले, प्रजाओं के पति सूर्यदेव, आपकी किरणों का समूह चारों ओर फैल रहा है, जिस कारण आप प्रकृति ही मालूम पड़ रहे हैं। अपनी किरणों का मायाजाल समेटिये, जिससे मैं आपके पुरुष रूप का दर्शन कर पाऊं।

उपनिषद् काल की यह प्रार्थना सूर्य षष्टी पूजा में, जिसे छठ पूजा भी कहते हैं, में साकार हो जाती है। बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में छठ पूजा अत्यधिक श्रद्धा और भक्ति से उगते हुए और अस्त होते सूर्य को अर्घ्य देकर मनायी जाती है। गौर करने की बात यह है कि सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य अपनी किरणें समेट लेते हैं। इस पूजा में पुरुष रूप में सूर्य को दीनानाथ और स्त्री रूप में छठी मैया कहकर संबोधित किया जाता है। छठी मैया सूर्यदेव की बहन भी मानी गई हैं।

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्करः

आदि, यानी जहां से कहानी शुरू हुई, सूर्य के कारण ही सृष्टि फल-फूल रही है, बारिश अपने नियत समय पर होती है, पौधे उगते हैं, अन्न पकता है, वायु चलती है, धरती उपजाऊ होती है। जिन पंच महाभूतों से ब्रह्मांड रचा गया है- धरती, आकाश, वायु, अग्नि और जल, उन सबका संचालन सूर्य करते हैं और अग्नि सूरज का ही अंश है। इस कारण से वेद में सूर्य को पहला रुद्र (हिरण्यगर्भ) कहा गया है। इसी हिरण्य (प्रज्वलित) गर्भ में संसार स्थित है और यह हिरण्यगर्भ तीनों लोकों (भूः, भुवः और स्वः) में स्थित है। भूः का अर्थ है यह पृथ्वी लोक, भुवः का अर्थ है अंतरिक्ष लोक और स्वः का अर्थ है स्वर्ग लोक। गायित्री मंत्र में इन तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाले सूर्य से प्रार्थना की गई है और श्री सूक्त में अग्निदेव सूर्य से हिरण्यवर्णां तपे स्वर्ण के समान वर्ण वाली लक्ष्मी का आह्वान किया गया है।

सूर्य उपासना के लाभ

सूर्यदेव सभी प्राणियों के पोषक, दिवा-रात्रि और ऋतु परिवर्तन के कारक हैं। विभिन्न व्याधियों के विनाशक हैं।

सूर्य को धन्यवाद देने के लिए ऋषियों ने दिन की शुरुआत सूर्य नमस्कार से करने का नियम स्थापित किया, जिससे कि मनुष्य, जगत प्राण (सूर्य) को अपनी कृतज्ञता प्रकट कर सकें और उनके जीवन में भी सूर्य के समान तेजस्विता स्थापित हो सके। देवताओं की कृपा से ही उनका जीवन सुचारु रूप से चल रहा है।

1. आरोग्य भास्करादिच्छेत

सूर्य साक्षात् देव हैं। वे आरोग्य प्रदाता हैं। अथर्ववेद में वर्णित है कि सूर्य की किरणें हृदय की दुर्बलता, कुष्ठ रोग आदि को दूर करती हैं। पौराणिक ग्रंथों में ऐसा वर्णन है कि श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब को महर्षि दुर्वासा के श्रापवश कुष्ठ रोग हो गया था और तब श्रीकृष्ण ने साम्ब को सूर्य की पूजा करने का निर्देश दिया, जिससे उनका रोग समाप्त हो गया।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी मानता है कि सूर्य की किरणें विटामिन डी का श्रेष्ठतम स्रोत हैं और यह विटामिन अस्थियों को दृढ़ करता है और डिप्रेशन को दूर करने में सहायक है। और तो और, विटामिन डी आपके हृदय की कार्य प्रणाली को भी सुचारू रूप से गतिशील रखता है।

2. चक्षो सूर्यो जायत-यजुर्वेद

सूर्य नारायण जगत के नेत्र हैं। चाक्षुषी विद्या का श्रद्धापूर्वक पाठ करने पर नेत्र रोगों का नाश होता है और नेत्र ज्योति में वृद्धि होती है।

3. आयु प्रदाता एवं वैभवदाता

यजुर्वेद में ऐसी प्रार्थना का उल्लेख है, जिसमें सूर्यदेव से कामना की गयी है कि हम सौ शरद ऋतु देखें, सौ वर्ष जीएं और कभी दरिद्र नहीं हों। ऐसी कथा है कि महाभारत काल में जब पांडव वनवास में भूख-प्यास से पीड़ित थे, तब युधिष्ठिर ने सूर्यदेव के 108 नामों का जप किया, जिससे प्रसन्न होकर सूर्यदेव ने युधिष्ठिर को अक्षय पात्र दिया, जिसमें रखा भोजन कभी समाप्त नहीं होता था।

4. तमोऽरिं सर्वपापघ्नं

सूर्यदेव की साधना से शत्रु का नाश संभव हो जाता है। जब श्रीराम भी रावण से युद्ध करते हुए थक गए तो उन्होंने भी आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ किया तथा युद्ध में विजय प्राप्त की और कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन ने भी श्रीकृष्ण की आज्ञा मानकर सूर्य स्तोत्र का जप किया और युद्ध के लिए तत्पर होकर विजय प्राप्त की। वैदिक ऋषि सूर्य से प्रार्थना करते हैं कि 'आप हमारी बुराइयों और पापों को नष्ट करें एवं मंगल का पथ प्रशस्त करें' फिर हम क्यों सूर्य कृपा से वंचित रहें? सूर्य से ही पृथ्वी पर जीवन है, प्रकाश है। हमारी आत्मा में जो प्रकाश है, वह भी सूर्य का ही प्रतिबिम्ब है और सूर्य की इस जगत के प्रति अभूतपूर्व संवेदना है। जिस दिन सूर्योदय नहीं होता, उस दिन पूरी सृष्टि की लय टूट जाती है। सूर्य साधना द्वारा आप जगत की आत्मा (ब्रह्म) से जुड़ते हैं और वह क्षण जीवन को महानता की ओर ले जाता है।

लोक आस्था का पर्व 'छठ' - सूर्य षष्टी पर्व

छठ महोत्सव मात्र एक उत्सव न होकर एक तपस्या है। तीन दिनों तक चलने वाले इस पर्व में व्रती सूर्य नारायण के समक्ष उनकी प्रसन्नता हेतु कठिन व्रत रखकर अत्यंत कठिन नियमों का पालन करते हुए तपश्चर्या करते हैं। यह सृष्टि तप के प्रभाव से ही चल रही है। उपनिषद्कारों ने तप को क्रिया का उग्रतम रूप माना है और सृष्टि के आरंभ से सूर्य क्रियारत हैं। प्रतिदिन निश्चित समय पर उदित होते हैं और जब उनके अस्त होने का आभास होता है, उस समय वह कहीं और उदित हो रहे होते हैं। सूर्य तेजस्विता साधना संपन्न करने का श्रेष्ठतम मुहूर्त्त छठ का दिन है, क्योंकि तप में जब साधना का बल आता है, तब वह सौ गुना प्रभावी हो जाता है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

फिर चला मोदी का जादू, उभरा तेजस्वी का तेज

बिहार विधानसभा चुनाव... फेल हुआ एग्जिट पोल, बिहार में एक बार फिर एनडीए सरकार

विशेष संवाददाता

पटना : बिहार विधानसभा चुनाव की वोटिंग समाप्त होते ही एग्जिट पोल के संभावित नतीजों से ऐसा लगने लगा था कि इसबार यहां भाजपा-जदयू का बेड़ा गर्क हो जायेगा। परन्तु चुनावी नतीजे आने के साथ ही अधिकतर एग्जिट पोल के सारे दावे पूरी तरह फेल हो गये। बिहार में मोदी का जादू एकबार फिर से चल गया और एनडीए ने पूर्ण बहुमत हासिल कर लिया है। चुनाव परिणाम ने एक ओर जहां मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की लोकप्रियता पर बट्टा लगा दिया है, वहीं दूसरी ओर राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के पुत्र तेजस्वी यादव की तेज उभरकर सामने आयी। राजद ने अपने दम पर सभी दलों से ज्यादा 76 सीटें हासिल की। इसका सारा श्रेय अकेले तेजस्वी यादव को जाता है। कांग्रेस फिर राजद का पिछलग्गू बनी रही। अब एनडीए 125 के आंकड़े प्राप्त कर पूर्ण बहुमत से अपनी सरकार बनाने जा रहा है। हालांकि, भाजपा से कम सीटें लाने के बावजूद यहां नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही सरकार बनने जा रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नीतीश के मुख्यमंत्री बनने पर अपनी मुहर लगा दी है। लेकिन नीतीश की लोकप्रियता का ग्राफ तेजी से गिरा है। इससे पहले नीतीश ने शराबबंदी का नारा देकर बिहार में महिलाओं का अधिकाधिक वोट पाकर अपनी सरकार बनायी थी। लेकिन, शराबबंदी नीतीश के लिए भारी पड़ी। क्योंकि, महिलाओं ने भी यह समझ लिया कि शराबबंदी से लोगों को और भी अधिक नुकसान उठाना पड़ा है। क्योंकि शराबबंदी कानून सिर्फ कागजों तक सिमटी रही और नीतीश सरकार के कार्यकाल के दौरान बिहार में शराब माफियाओं की चांदी कटती रही। कहने के लिए यहां शराबबंदी थी, पर शराब की होम-डिलिवरी गांव-गांव और घर-घर तक होती रही। नामी-गिरामी ब्रांडों के नाम पर बिहार में झारखंड सहित अन्य पड़ोसी राज्यों से भारी मात्रा में नकली शराब की तस्करी बेरोक-टोक होती रही।

भाजपा बनी दूसरी सबसे बड़ी पार्टी

इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। भाजपा को 74 सीटें मिलीं, जबकि नीतीश के नेतृत्व वाले जनता दल यूनाइटेड (जदयू) को केवल 43 सीटों पर संतोष करना पड़ा। बिहार की 243 सदस्यीय विधानसभा में सरकार बनाने के लिए 122 सीटों की जरूरत होती है। इस चुनाव में भाजपा की 74, जदयू की 43, हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) की चार तथा विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) की चार सीटों के साथ एनडीए (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) ने 125 सीटों का आंकड़ा प्राप्त कर लिया है। जबकि, लोजपा ने भी एक सीट पर जीत दर्ज की है। चुनावी नतीजों के बाद कयास यह लगाये जा रहे थे कि मुख्यमंत्री भाजपा का ही होगा, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने दिल्ली स्थित भाजपा कार्यालय में बिहार की जीत पर आयोजित एक खास समारोह में यह साफ कर दिया कि बिहार के अगले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही होंगे।

चिराग ने बिगाड़ा नीतीश का खेल

हालांकि, जदयू की कम सीटें होने के बावजूद नीतीश कुमार के ही मुख्यमंत्री बनने का रास्ता साफ हो गया है। लेकिन, नीतीश में पहले जैसा आत्मबल अब नहीं होगा। क्योंकि, वे अब पहले की तरह भाजपा को अपने इशारों पर नचाने की स्थिति में नहीं होंगे। दरअसल, उनका यह खेल लोक-जनशक्ति पार्टी (लोजपा) के नेता चिराग पासवान ने बिगाड़ दिया है। चिराग केन्द्र सरकार में एनडीए के साथ रहते हुए भी बिहार में उसके साथ नहीं रहे। उन्होंने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि वे नीतीश कुमार को अपना नेता नहीं मान सकते। चिराग ने नीतीश सरकार के विफल शराबबंदी कानून का कड़ा विरोध किया था। उन्होंने साफ कर दिया था कि इस कानून ने जहां बिहार को भारी राजस्व का नुकसान हुआ, वहीं इसकी आड़ में अवैध और नकली शराब का धंधा तेजी से फैला। इससे बिहार के लोगों का भारी नुकसान हुआ है। लिहाजा, चिराग नीतीश के खिलाफ न सिर्फ मुखर रहे, बल्कि उन्होंने उन सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार उतार दिये, जहां नीतीश की पार्टी जदयू के प्रत्याशी खड़े थे। उनका मकसद सिर्फ नीतीश को कमजोर करना था और वे अपने मकसद में कामयाब रहे। कहा तो यहां तक गया कि चिराग के इस फैसले के पीछे भाजपा उनके साथ खड़ी थी, ताकि नीतीश कुमार का कद कम किया जा सके। ...और अंततः हुआ भी वही।

सटीक रहा 'रनेमा' का एग्जिट पोल

बिहार चुनाव को लेकर लगभग एक दर्जन समाचार चैनलों व एजेंसियों द्वारा किये गये एग्जिट पोल के दावे गलत रहे, वहीं, सन्मार्ग-रनेमा का दावा बिल्कुल सटीक साबित हुए। सन्मार्ग-रनेमा एग्जिट पोल में एनडीए और महागठबंधन के बीच कांटे का टक्कर बताते हुए एनडीए को 122, महागठबंधन को 115 तथा अन्य को 7 से 10 सीटें मिलने का अनुमान जताया गया था। नतीजा आने के बाद एनडीए ने 125 सीटों का आंकड़ा छू लिया है, वहीं महागठबंधन की भी कमोवेश वही स्थिति रही, जिसका अनुमान किया गया था। सन्मार्ग-रनेमा के इस एग्जिट पोल को 235 लोगों की टीम ने मिलकर पूरा किया। प्री-पोल एवं पोस्ट-पोल के बाद कम्पनी ने अपनी सर्वे रिपोर्ट दी थी।

सीतामढ़ी को जाम से निजात दिलाने की पहल तेज

मिथिला डायरी

सतीश कुमार झा

सीतामढ़ी : जिला मुख्यालयों को जाम की समस्या से निजात दिलाने एवं राज्य में सुचारू यातायात व्यवस्था कायम करने को लेकर सरकार के संकल्प के आलोक में सीतामढ़ी के लिए दो बाईपास रोड का प्रस्ताव जिलाधिकारी अभिलाषा कुमारी शर्मा ने पथ निर्माण विभाग, बिहार पटना को भेजा है। एक बाईपास पथ का नाम शंकर (चौक एनएच 77) सीतामढ़ी से बरियारपुर भाया अमघट्टा हुसैना मोड़ है। इस रोड की लंबाई 4.80 किलोमीटर है। इसकी अनुमानित लागत लगभग 112 करोड़ रुपये होगी। दूसरी बाईपास रोड कारगिल चौक से पासवान चौक एवं अम्बेडकर चौक होते हुए सीतामढ़ी-रीगा पथ के 1 किलोमीटर तक। इसकी लंबाई 2.45 किलोमीटर होगी। इसकी अनुमानित लागत 24.50 करोड़ है। इस पथ के निर्माण में भू-अर्जन की आवश्यकता भी नहीं होगी। इन सड़कों के निर्माण से सीतामढ़ी बाजार में यातायात का भार काफी कम हो जाएगा तथा सीतामढ़ी बाजार में लगने वाली जाम से स्थायी रूप से निजात मिलेगी। इसके अतिरिक्त जिलाधिकारी ने विश्वनाथपुर चौक से खरका बसंत एनएच 122ए की अविलम्ब मरम्मति के लिए कार्यपालक अभियंता एनएच को पत्र लिखकर निर्देशित किया है।

मुकेश को विधायक बनने पर बुद्धिजीवियों ने दी बधाई

बोखड़ा : सीतामढ़ी जिले के बाजपट्टी विधानसभा क्षेत्र से राजद नेता सह जिला प्रमुख संघ के अध्यक्ष मुकेश कुमार यादव के विधायक बनने के साथ पूरे क्षेत्र के बुद्धिजीवियों व सभी दलों के जन-प्रतिनिधियों ने उन्हें बधाई दी है। पूर्व मुखिया अखिलेश पटेल, उपप्रमुख आफताब आलम, जाबेद अख्तर, परवेज अहमद, शकील अहमद, समाजसेवी राम प्रमोद सहनी, मत्स्यजीवी मंत्री सुजीत कुमार, जिला परिषद सदस्य संजय कुमार झा, पूर्व प्रमुख हुकुमदेव यादव, मुखिया संघ के अध्यक्ष मदनमोहन झा, ललित कुमार, गणेश यादब, मिनहाज तरन्नुम, नन्द कुमार यादव, मेघनाथ यादव, दिनेश कुमार साह, मनोज कुमार यादव, चौरासी प्रसाद, पंसस संजीत साह, राम बाबू सहनी सहित दर्जनों लोगों ने मुकेश कुमार के विधायक चुने जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना तथा उनके नेतृत्व में क्षेत्र के चहुमुखी विकास की उम्मीद जतायी है।

वेलमार्क हॉस्पिटल से जुड़ा डीलक्स मेडिकल

संवाददाता

बोकारो। बोकारो में दवा व्यवसाय के विश्वसनीय प्रतिष्ठान डीलक्स मेडिकल की सेवा में एक नया आयाम जुड़ गया है। विश्वस्तरीय चिकित्सीय सेवा प्रदाता संस्थान वेलमार्क हॉस्पिटल से डीलक्स मेडिकल जुड़ चुका है। प्रतिष्ठान के प्रबंधक सह संचालक युवा समाजसेवी अंकित सिंह ने बताया कि नया मोड़ में खुले वेलमार्क हॉस्पिटल में फामेर्सी का पूर्ण प्रभार डीलक्स मेडिकल को मिला है। इसका विधिवत शुभारंभ हो चुका है। इसे अपने प्रतिष्ठान के लिए एक गौरवपूर्ण अध्याय बताते हुए अंकित ने कहा कि दवा के मामले सही खुराक, अच्छी गुणवत्ता और समुचित दवा जरूरी है। ये तीनों उनके यहां उपलब्ध हैं। उन्होंने इस अवसर के लिए वेलमार्क अस्पताल प्रबंधन के प्रति आभार भी जताया।

पेज- एक का शेष

युवा झारखंड...

लेकिन वहां झारखंड की तरह राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न नहीं हुई। झारखंड में तीन-तीन बार राष्ट्रपति शासन लागू हुआ। आरंभिक 14 वर्ष में 9 सरकारें आयीं और चली गयीं। केवल भाजपा के रघुवर दास के नेतृत्व की पिछली सरकार पहली ऐसी सरकार थी, जिसने अपना कार्यकाल पूरा किया। आज तक जितनी सरकारें बनीं, वे सब गठबंधन की सरकारें थी। हेमंत सोरेन के नेतृत्व की वर्तमान सरकार भी गठबंधन की सरकार है। ऐसी अवस्था में किसी भी मुख्यमंत्री के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह न केवल अपनी पार्टी के सभी विधायकों को संतुष्ट रखे, बल्कि नहीं चाहते हुए भी सभी सहयोगी दलों को साथ में लेकर चले। झारखंड में तो स्थिति ऐसी भी बनी, जब एक निर्दलीय विधायक को मुख्यमंत्री बना दिया गया था। राज्य की वर्तमान हेमंत सरकार अब एक साल पूरा करने जा रही है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की सरकार अपनी मंजिल की ओर धीरे-धीरे बढ़ रही है। विरोधी दल ने भले ही इस सरकार को निशाना बना रखा है, लेकिन अभी तक उसे इसमें सफलता मिलती नहीं दिख रही है। झामुमो-कांग्रेस गठजोड़ ने विधानसभा के दोनों क्षेत्रों के उपचुनाव में अपनी सीटें बरकरार रखी हैं। स्पष्ट है कि सत्ता-विरोधी रुझान पनप नहीं पाया है। सरकार ने कोरोना काल में झारखंड के प्रवासी मजदूरों को राहत पहुंचाने और महामारी से निपटने के मामले में संतोषजनक ढंग से कार्य किया है। अन्य चुनौतियों का सामना और विकास की दिशा में भी अच्छा कार्य हो रहा है। भौगोलिक विशिष्टता, प्रचुर खनिज संपदा व भरपूर संभावनाओं के कारण यह राज्य देश का सबसे खुशहाल राज्य बन सकता है। देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम बार-बार कहते थे कि 'दक्षिण के राज्यों की तरक्की का एक बड़ा कारण यह है कि वहां के राजनीतिक दल आपस में चाहे जितना लड़ें, लेकिन जब राज्य के हित की बात आती है तो सब एक हो जाते हैं।' परन्तु झारखंड समेत उत्तर के राज्यों में इसका अभाव है। सच्चाई है कि सिर्फ सरकार के भरोसे ही किसी प्रदेश के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। इसमें सभी जन-प्रतिनिधियों और प्रदेशवासियों को अपना योगदान देना होगा। झारखंड के नवनिर्माण यज्ञ में सबको आहुति देनी होगी। सबको कदम से कदम मिलाकर चलना होगा।

बेरमो में जयमंगल...

अपने पिता की विरासत बचा पाने में कामयाबी हासिल की। कुमार जयमंगल सिंह की ओर से भी मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सहित कई मंत्री व विधायक लगातार कैंपेन करके अपना मुद्दा जनता के बीच मनवाने में सफल रहे। बता दें कि पिछले लगभग 11 महीने की अवधि में बेरमो विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस के वोटर में बढ़ोत्तरी हुई है। इस बार के उपचुनाव में 12 दिसंबर, 2019 के हुए चुनाव की तुलना में 5077 वोट ज्यादा मिले हैं। वहीं, दूसरी ओर जीत का अंतर पिछली बार से 10947 कम हो गया। पिछली बार की तुलना में इस बार कांग्रेस और भाजपा, दोनों को वोट ज्यादा मिले, जीत भी कांग्रेस की ही हुई, परंतु जीत का अंतर कम हो गया। पिछली बार राजेंद्र सिंह को 88,945 तो योगेश्वर महतो को 63,773 वोट प्राप्त हुए थे। जीत का फासला 25172 वोटों का था। लेकिन, इस बार इस बार राजेंद्र सिंह के पुत्र जयमंगल ने कांग्रेस की झोली में अपेक्षाकृत 5077 ज्यादा 94022 वोट डाले। वहीं, योगेश्वर महतो पिछली से 16024 ज्यादा कुल 79797 वोट हासिल किए। इस बार जीत का फासला पिछली बार के 25172 की तुलना में 10947 घटकर 14225 हो गया।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***, प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **नीरज कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, **आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89** (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

मूंगफली के छिलकों से बना डाली स्मार्ट स्क्रीन

तकनीक... भारतीय वैज्ञानिकों की अहम कामयाबी

दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली : मूंगफली फोड़कर दाने खाने के बाद उसके जिस छिलके को हम बेकार समझ फेंक देते हैं, उसे काम के लायक बना दिखाया है भारतीय वैज्ञानिकों ने। वैज्ञानिकों ने मूंगफली के छिलकों से पर्यावरण के अनुकूल एक स्मार्ट स्क्रीन विकसित की है, जो न केवल गोपनीयता को बनाए रखने में मदद कर सकती है बल्कि इससे गुजरने वाले प्रकाश एवं गर्मी को नियंत्रित करके ऊर्जा संरक्षण और एयर कंडीशनिंग लोड को कम करने में भी मदद कर सकती है। प्रोफेसर एस. कृष्णा प्रसाद के नेतृत्व में शोधकताओं के एक समूह ने सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बैंगलोर, जो कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार का एक स्वायत्त संस्थान है, के डॉ. शंकर राव के साथ मिलकर मूंगफली के फेंके हुए छिलकों से इस तरह के एक सेलुलोज-आधारित स्मार्ट स्क्रीन को विकसित करने में एक अहम उपलब्धि हासिल की है।

पीआईबी सूत्रों के अनुसार इस स्मार्ट स्क्रीन के अनुप्रयोग में, तरल क्रिस्टल अणुओं को एक बहुलक सांचे में ढाला गया। इस सांचे का निर्माण सेलुलोज नैनोक्रिस्टल

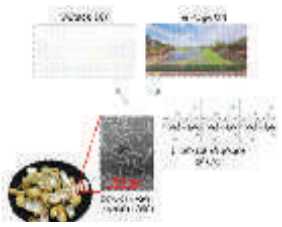

(सीएनसी) का उपयोग करके किया गया। ये सेलुलोज नैनोक्रिस्टल आईआईटी रुड़की में प्रोफेसर युवराज सिंह नेगी की टीम द्वारा मूंगफली के छोड़े हुए छिलकों से तैयार किए गए थे। तरल क्रिस्टल अणुओं के अपवर्तनांक को एक विद्युतीय क्षेत्र के अनुप्रयोग के जरिए एक खास दिशा की ओर मोड़ दिया गया। विद्युतीय क्षेत्र की अनुपस्थिति में, बहुलक और तरल क्रिस्टल के अपवर्तनांकों के बेमेल होने की वजह से प्रकाश का प्रकीर्णन हुआ। कुछ वोल्ट के एक विद्युतीय क्षेत्र के अनुप्रयोग से, तरल क्रिस्टल अणु दिशा परिवर्तन की एक प्रक्रिया से गुजरे, जिसके परिणामस्वरूप अपवर्तनांकों में मेल हुआ और उपकरण लगभग तुरंत ही पारदर्शी हो उठा।

जैसे ही विद्युतीय क्षेत्र का प्रयोग बंद किया गया, यह प्रणाली प्रकीर्णन वाली अवस्था में वापस लौट आई। बटन दबाने पर उपलब्ध दो अवस्थाओं के बीच यह उत्क्रमणीय बदलाव हजारों चक्रों में हुआ। इस उत्क्रमणीय बदलाव के दौरान अनिवार्य रूप से व्यतिरेक या बटन दबाने की गति में कोई परिवर्तन नहीं होने दिया गया।

OUTSTANDING RESULT in NEET- 2019

ADMISSION OPEN

MEDICOS CLASSES

An institute for PMT only

COURSES OFFER

BIOLOGY FOR CLASS XI AND XII

COMPLETE MEDICAL PREPARATION FOR CLASS XI AND XII

Dr. P.K. Jha

CA-22, City Centre, Sec-4 (Near Mansarovar), B.S. City. Contact - 9235001881, 8409152715

सभी दंत समस्याओं का एक समाधान

डॉ. नरेन्द्र मेमोरियल डेंटल सेंटर

138 को-आपरेटिव कॉलोनी (बोकारो)

दांत एवं मुंह संबंधी सभी बीमारियों के इलाज की पूर्ण सुविधा।

समय : सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 बजे तक

संध्या 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक

(शनिवार अवकाश)

डा. निकेत चौधरी (संध्या में)

दीपावली, छठ और झारखंड स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

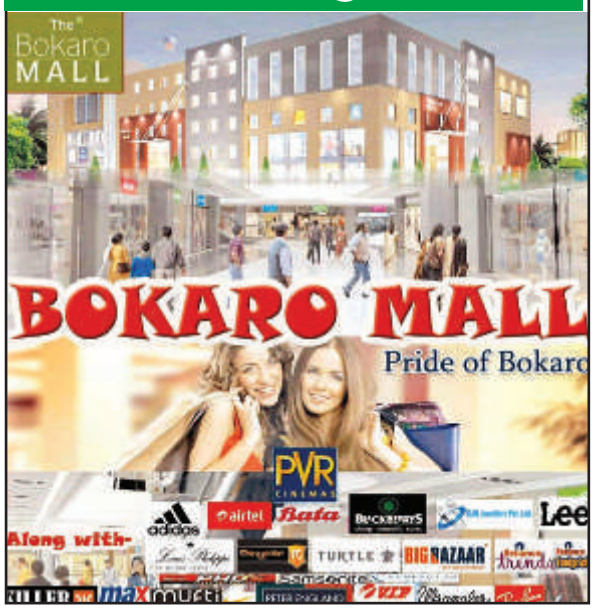

सभी देशवासियों को दीपावली, छठ और झारखंड स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

कमल कुमार पांडेय

प्रोपराइटर, मेसर्स दुर्गा इंटरप्राइजेज, बियाडा (बोकारो)।